ॐ

आत्मसिद्धि (हिन्दी)

षट् दर्शन गर्भित हुए, इन षट् स्थानक माहिं ।
मनन करत विस्तार से, संशय रहे न कोई ।।१२८।।
आत्म-भ्रान्ति सम रोग नहिं, सदगुरु वैद्य सुजान ।
गुरु-आज्ञा सम पथ्य नहिं, औषध विचार ध्यान ।।१२९।।
यदि इच्छा परमार्थ की, करो सत्य पुरुषार्थ ।
भव-स्थिति आदि नाम ले, छेदो नहिं आत्मार्थ ।।१३०।।
निश्चय वाणी श्रवण कर, साधन तजो न कोय ।
निश्चय रखकर लक्ष्य में, साधन करने योग्य ।।१३१।।
नय निश्चय एकान्त से, यहाँ कहा नहिं लेश ।
एकान्त नहिं व्यवहार भी, उभयदृष्टि सापेक्ष ।।१३२।।
गच्छ-मत की कल्पना, वह नहिं सद्व्यवहार ।
भान नहिं निजरूप का, वह निश्चय नहिं सार ।।१३३।।
पहले ज्ञानी हो गये, वर्तमान में होय ।
होंगे काल भविष्य में, मार्ग-भेद नहिं कोय ।।१३४।।
सर्व जीव हैं सिद्ध-सम, जो समझे वह होय ।
सदगुरु आज्ञा जिन-दशा, निमित्त-कारण होय ।।१३५।।
उपादान का नाम ले, वह जो तजे निमित्त ।
पाये नहिं सिद्धत्व को, रहे भ्रान्ति में स्थित ।।१३६।।
मुख से ज्ञान कहें अरे ! अन्तर छुटा न मोह ।
वह पामर प्राणी करे, मात्र ज्ञानी का द्रोह ।।१३७।।
दया, शान्ति, समता, क्षमा, सत्य, त्याग, वैराग्य ।
होय मुमुक्षु घट विषे, ये सब सदा सुजाग्य ।।१३८।।

मोहभाव क्षय हो जहाँ, अथवा होय प्रशान्त ।
उसे कहें ज्ञानी-दशा, बाकी कहिए भ्रान्त ।।१३९।।
सकल जगत अच्छिष्टवत्, अथवा स्वप्न समान ।
उसे कहें ज्ञानी-दशा, बाकी वाचा ज्ञान ।।१४०।।
स्थानक पाँच विचार कर, छठवें में जो होय ।
पावे स्थानक पाँचवाँ, संशय नहिं हे कोय ।।१४१।।
देह रहते जिनकी दशा, वर्ते देहातीत ।
उन ज्ञानी के चरण में, हो वन्दन अगणित ।।१४२।।

*　　*　　*